रिकार्ड:- जाग सजनियां जाग:- ओमशान्ति प्रात: क्लास 26/2/68

ओमशान्ति। नव युग में होते हैं देवी-देवतायें। हैं वह भी मनुष्य परन्तु उन्हों के गुण देवताओं जैसे हैं। वह हैं वैष्णव। डबलअहिंसक। अभी तो मनुष्य हैं डबल हिंसक। मारा-मारी भी करते हैं और काम कटारी भी चलाते हैं। इनको कहा ही जाता है मनुष्य लोक। जिसमें विकारी मनुष्य रहते हैं। उनको कहा जाता है देवलोक। जिसमें देवी-देवतायें रहते हैं। वह हैं डबलअहिंसक। यह भी तुम बच्चों को समझाया जाता है। इन्हों का राज्य था ना। कल्प की आयु लाखों बर्ष होती तो कोई बात ख़याल में भी नहीं आ सकता। आजकल कल्प की आयु भी कम करते जाते हैं। कोई सात हज़ार बर्ष, कोई 10 हज़ार बर्ष कहते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं ऊंच ते ऊंच भगवान [illegible] हम आत्मायें रहती हैं। वह हैं शान्तिधाम [illegible] म बिन्दी है ना। रास्ता बताने वाला भी बिन्दी। इस यात्रा का बर्णन कहां है नहीं। भल गीता में अक्षर [illegible] मनमनाभव। परन्तु उनका अर्थ क्या है, अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह कोई की बुधि में नहीं आता। जब बाप आये समझाते हैं तब ही बच्चे जानते हैं। इस समय ही तुम मनुष्य से देवता बनते हो। मनुष्य हैं कलियुग के अन्त में। देवतायें हैं सतयुग आदि में। अच्छा यह मनुष्य से देवता बने कहां? तुम्हारी यह ईश्वरीय मिशन है ना। निराकार ईश्वर को कोई भी मनुष्य समझ न सके। निराकार को हाथ-पांव कहां से आवें। कृष्ण को तो हाथ-पांव सभी हैं। भक्ति मार्ग में कितने पुस्तक आद बना दिये हैं। ढेर के ढेर हैं। अभी बच्चों को म्युज़ियम आद में समझाना होता है। चित्र तो तुम्हारे पास बहुत हैं ना। चित्र से ही याद आती है यह समझावें। और भी चित्र शायद बनते जावेंगे। एकदम ऊपर में आत्माओं को भी दिखावेंगे। छोटी2 आत्मायें ही आत्मायें देखने में आवेंगी। फिर सूक्ष्मवतन फिर नीचे सब मनुष्यों का लोक बनावेंगे। मनुष्य कैसे पिछाड़ी में आकर फिर ऊपर में चढ़ते हैं। यह भी सब तुम निकालेंगे। दिन प्रति दिन इन्वेंशन निकलती जाती है। अभी समझो जितने चित्र हैं उतनी ही सर्विस की है। फिर ऐसे 2 [illegible] बनेंगे जिससे मनुष्य और ही [illegible] समझ जावें। [illegible] नहीं। जिसने जितना कल्प पहले पद पाया है, जो रिज़ल्ट निकली है वह ही निकलेंगे। नये2 निकलते जा रहे हैं। ऐसे नहीं पिछाड़ी में आने वाले माला का दाना नहीं बन सकेंगे। वह [illegible] बनेंगे। नवधा भक्ति [illegible] रात-दिन [illegible] में ही लग पड़ते हैं तब सा० होता है। यहां भी ऐसे निकलेंगे जो रात-दिन मेहनत कर पतित से पावन बनेंगे। चांस तो सभी को हैं। ऐसे नहीं पिछाड़ को कोई रह जावेगा। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। कोई भी रह न सके। पैगाम सभी को मिलेगा। बहुत तरफ पैगाम देना है। मद्रास, कच्छ, भुज आद बहुत है। शास्त्रों में भी हैं ना एक रह गया तो डोरापा दिया। सबको मालूम पड़ेगा। यह चित्रअखबारों में भी जावेंगे। तुमको निमंत्रण मिलते हैं। सबको मालूम पड़ेगा बाप आया हुआ है। जब पूरा निश्चय होगा तब दौड़ेंगे। नाभाचार निकलता रहेगा। नवयुग सतयुग को ही कहा जाता है। नवयुग अखबार भी निकलता है। न्युदेहली कहते हैं ना। अभी एकदम नई तो नहीं हैं ना। एकदम न्यु देहली में तो पुराने कीले आद इतना कचड़ा आद हो न सके। अभी तो नदियां भी कितनी टेढ़ी-बांकी हो गई है। तुम देवतायें भी टेढ़-बांके हो गये हो। हर चीज़ टेढ़ी-बांकी है। सतयुग में सभी तत्व आद आर्डर में रहते हैं। यहां तो 5 तत्व ही तमोप्रधान हैं। अनाज़ नहीं मिलता। कब बहुत ठंढी, कब बहुत गर्मी। तमोप्रधान पतित हैं ना। वहां तो सतोप्रधान होते हैं। हर एक तत्व से सुख मिलता है। दुःख का नाम ही नहीं। उसका तो नाम ही स्वर्ग। यह बातें भी तुम समझ रहे हो। बराबर हम तमो तमोप्रधान बन गये थे। अभी सतोप्रधान बनने लिए पुरुषार्थ कर मंज़िल पर चढ़ रहे हैं। और सभी अंधियारे में हैं। हम रोशनी में जा रहे हैं। हम ऊपर जा रहे हैं। और सभी नीचे ही गिर रहे हैं। यह सब विचार सागरमथन तुम बच्चों को ही करना है। शिवबाबा तो है सिखलाने वाला। वह तो मथन नहीं करेंगे। इनको मथन करना होता है। तुम भी बिचार सागर मथन कर समझाते हो। कोई का तो मथन

बिलकुल होता ही नहीं। पुरानी दुनिया ही याद पड़ती रहती। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्धों को भूलते जाओ। समझते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन का हो रही है। बाप कहते हैं मैं आकर राजधानी स्थापन करता हूं। और सभी को वापस ले जाता हूं। वह लोग तो सिर्फ अपना2 धर्म स्थापन करते हैं। जैसे सिक्ख धर्म का नानक आया। उनके पिछाड़ी और आते रहेंगे। वह गुरु तो ठहरा नहीं। उनकी क्या महिमा करेंगे। महिमा तो तुम्हारी है। आदी सनातन देवी-देवताधर्म को ही हीरो-हीरोइन कहा जाता है। हीरे जैसा जन्म और कौड़ी जैसा जन्म तुम्हारे लिए ही कहा जाता है। फिर तुम गिरते भी एकदम पांव पर हो। एकदम नीचे आये पड़ते हो। तो इस समय तुम बच्चों को देवताओं [illegible] जरूरी खुशी होनी चाहिए। क्योंकि [illegible] लाटरी मिलती है, भगवान पढ़ाते हैं। वहां तो देवतायें दे[illegible]ओं को ही पढ़ावेंगे। यहां मनुष्य मनुष्य को ही पढ़ाते हैं। और तुम आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। फर्क हो [illegible] या ना। वह देवतायें, वह असुर। रामराज्य और रावण राज्य को भी तुम ने समझा है। अभी तुम जितना श्रीमत पर चलेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। अज्ञान काल में तो जो [illegible] करेंगे वह उल्टा ही होगा। छोटेपन में सगीर बुधि होती है। फिर बालिग होती है। 16-17 वर्ष बाद सगाई हो ती है। आजकल तो गन्द बहुत है। पेट में पड़े हुये की वा गोद वाले की भी सगाई करा देते हैं। डेती-लेती चलती रहती है। वहां यह सब बातें होती नहीं। वहां शादियां आद कितनी राज होती है। तुमको दिखाया था। जितना नज़दीक होते जावेंगे तो तुम बहुत देखेंगे। अच्छे2 फर्स्ट क्लास महारथी होंगे। उन्हों की आयु भी बढ़ती रहेगी। बाप कहते हैं योग से तुम अपनी आयु को बढ़ाओ। जल्दी मर पड़ते हैं क्योंकि योग की कमज़ोरी है। आयु कम हो पड़ती है। अच्छे2 बच्चे को ज्ञान है नहीं तो आयु कैसे बढ़ेगी। टूट पड़ते हैं। अभी समझते हैं योग में तो हम बहुत ही ढीले हैं। यह बात तो बुधि में थी नहीं। याद में रहने लिए माथा मारते रहते हैं। [illegible] सकते। घड़ी2 भूल जाते हैं। वास्तव में यह [illegible] अच्छा होना चाहिए। बाहर में तो गोरख धंधे में रहते हैं। यहां तो यज्ञ में रहे पड़े हैं तो भी कोई चार्ट लिख नहीं सकते। योग को समझते ही नहीं तो लिखेंगे क्या। बाप को याद करते2 यहां ही [illegible]प्रधान बनना है। बाप कहते हैं कम से कम 8 घंटा काम करते मुझे याद करो। भोजन बनाते हो, कुछ भी काम करते हो शिवबाबा को याद करो। कर्मातीत अवस्था को अन्त में पाना है। अभी कोई की नहीं है। यह बाबा भी पुरुषार्थी है। कोई कहे हम 5-6 घंटा याद में रहते हैं बाबा मानेंगे नहीं। कई तो लज्जा के मारे चार्ट लिखते ही नहीं। आधा घंटा भी याद नही कर सकते। यहां मुरली सुनने में कोई याद थोड़े ही रह सकती है। वह तो धन कमाते हो। याद कहां रहती है। मुरली सुनते रहते हो। याद में सुनना बन्द हो जाता है। कई बच्चे तो यह भी याद में लिख देते हैं। परन्तु यह कोई याद थोड़े ही है। बाबा जो कहते हैं घड़ी2 भूल जाता हूं। भोजन पर बैठता हूं याद में, बाबा आप तो अभोक्ता हो, कैसे कहूं कि आप भी खाते हो, हम भी खाते हैं। कोई2 बातें मैं कहेंगे बाबा साथ है। तो मुख्य हैं ही याद की यात्रा। मुरली के सबजेक्ट बिलकुल ही अलग हैं। याद से पवित्र बनना है। आयु भी बढ़ती है। ऐसे नहीं कि मुरली सुनो शिवबाबा इसमें था ना। नहीं। मुरली सुनने से विकर्म नहीं विनाश होते हैं। मेहनत है। बाबा जानते हैं बहुत बच्चे बिलकुल याद नहीं करते हैं। याद करने वाले की अवस्था, बोल-चाल बिलकुल ही अलग रहेगा। याद से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। परन्तु माया ऐसी है जो जैसा बुक बनाये देती है। बहुतों की बिमारी उथल पड़ती है। मोह जो नहीं था वह भी प्रगट हो जाता है। फंस मरते हैं। बड़ी मेहनत है। कोई लिखते हैं मुरली सुनना था याद में था। बाबा पकड़ेंगे। मुरली अलग चीज़ है वह हैं धन कमाने की बात। उन से आयु नहीं बढ़ती है। पावन नहीं बनेंगे। मुरली तो बहुत ही चलाते हैं फिर भी विकार में गिर पड़ते हैं। [illegible] तुम्हारे पास [illegible] में बहुत

आते हैं जो विकारी होंगे। सच्च बतालाते नहीं है। बाबा के पासे ऐसे देहली में आते थे। हम कहते थे पवित्र नहीं रह सकते हो तोयहां आते ही क्यों हो। आउंगा तब तो पावन बनुंगा। मैं बिलकुल ही अजामिल हूं। यहां आने से कुछ तो सुधार होगा नहीं तो जावें कहां। रास्ता तो यही है। ऐसे2 भी आते हैं। कोई न कोई समय तीर लग जावेगा। बाबा यहां के लिए भी कहते हैंकोई अपवित्र आना नहीं चाहिए। यह तो ईन्द्र सभा है। अभी तो आ जाते हैं। एक दिन यह आर्डीनेन्स निकलेगा यहां कोई भी आ न सके। यह है होलीटावर। होलीएस्ट ऑफ दी होली टॉवर। एक दिन यह लिखना पड़ेगा अनहोली पतित कोई अन्दर नही आ सकते हैं। जब पक्की गैरन्टी करे तब ही अलां करेंगे। बड़े आदमी आते हैं-पवित्र थोड़े ही हैं। एक दिन यह लिखा जावेगा। जोसमझेंगे संस्था हैकोई अपवित्र अन्दर आ नहीं सकता। हाल भी बड़ा बन जावेगा। अभी तो छोटा है। समझते हैं डबल स्टोरी कर देंगे। या किराया परलेंगे। बड़ा बनना है तो सही। फिर कोई घूस न सकेंगे। यह किसकी सभा है? तुम भगवान, ईश्वर, सोमनाथ बबुलनाथ के पास बैठे हो। वही पावन बनाने वाला है। अभी तो शुरुआत है। आखिरीन बहुत आवेंगे। तो कोई हंगामा आद नही कर सकेंगे। इस धर्म के जो होंगे वह निकल आवेंगे। आर्यसमाजी भी हैहिन्दु। सिर्फ म०-पं० अलग कर दिया है। देवताएं तो हुये सतयुग में। यहां सभी हिन्दु हैं। वास्तव में हिन्दु धर्म है नहीं। यह तोहिन्दुस्तान देश है। तो बच्चों को उठते-बैठते चलते स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। स्टुडन्ट को पढ़ाई की याद रहनी चाहिए। सारा चक्र बुधि में है। देवताओं और तुम्हारे में थोड़ा फर्क पड़ रहा है। पक्के स्वदर्शनचक्रधारी बन जावेंगे तो फिर विष्णु के कुल के बन जावेंगे। तुम समझते होहम यह बन रहे हैं। वह (देवताएं) फाईनल है। तुम फाईनल तब होंगे जब कर्मातीत अवस्था हो। शिव बाबा तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। तो उन में नालेज है ना। वह है तुमको बनाने वाला। तुम हो बनने वाले। ब्राह्मण बन फिर ऐसा (देवता) बनेंगे। अभी यह अलंकार तुमको देवेंगे। अभी तो पुरुषार्थी हो। तुम फिर विष्णु के कुल के बनते हो। सतयुग [illegible] कुल है ना। तो ऐसा बनना है ना। कोई2 को [illegible] न तो ऐसी है अज्ञानियों से भी खराब। वह क्या बनेंगे। सेन्टर पर भी ऐसे 2 हैं तो फिर भोजन, सफाई आद करते हैं। वास्तव में उनको भी रखना बेकायदे हैं। वह सच्चा ब्राह्मण तो नहीं हुआ ना। भोजन बनाने वाले भी ऐसी हो जायेंजो याद में रह भोजन बनावे। ब्रह्मा भोजन जिसकी महिमा हैवह अभी थोड़े ही मिलता है। आस्ते2 मिलेगा। जिस में बहुत ताकत होगी। याद में रह भोजन बनावे तब ताकत आवे। पक्के हो जावेंगे फिर जल्दी2 उन्नति को पावेंगे। कर्मातीत अवस्था को तो पाना ही है। अभी देरी है। अभी वह अवस्था कहां है। तुच्छसे भी तुच्छ बुधि है। अज्ञान काल में बाबा को बहुत ही परिवार देखे हुये हैं बहुत प्रेम से रहते हैं। तुमको तो बहुत मीठा बनना है। ऐसा-वैसा अक्षर बोलने से न बोलना अच्छा है। एक दृष्टान्त देते हैं दो लड़ते थे, सन्यासी को बुलाया, उसने कहा महलरा मुख में डाल दो। कब निकालना नहीं। रेसपान्डीबिल न सकेंगा। 5 विकारों को जीतना कोई मासी का घर नहीं है। कोई2 अपना अनुभव भी बताते हैं हमारे में बहुत क्रोध था। अभी बहुत कम हो गया है। बहुत2 मीठा बनना है। कल तो इन देवओं के गुण गाते थे, आज तुम समझते हो हम ऐसे ही बन रहे हैं। नम्बरवार ही बनेंगे। जो सर्विस करेंगे उनका बाबा रस नाम लेंगे। रास्ता बताना चाहिए। सभी अंधे के आगे अंधे हैं। हम भी थे। कुछ नहीं जानते थे। अभीकितनी नालेज मिली है। जो अच्छी रीत धारण नहीं करते हैं तो रिपोर्ट आती है बाबा इन में तो बहुत क्रोध है। बाबा तो जानते हैं ना। रूहानी सर्विस नहीं कर सकते हैं तो फिर स्थूल सर्विस। बाबा की याद में रह सर्विस करे तो भी अहो भाग्य। एक दो को याद दिलाते रहो। याद से ही बहुत बल मिलेगा। याद करने वाले को फिर चाट रखना पड़े। चार्ट से मालूम पड़ जाता है। हरेक को बाबा तो सावधान करते रहते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बाबा का याद प्यार गुडमोर्निंग।

****